

How to Read the Bible Through in A Year...

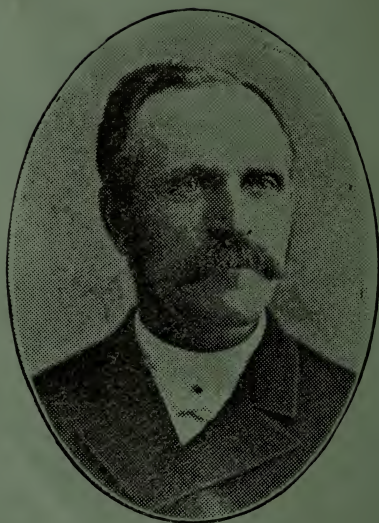


Entered according to Act of Parliament of
Canada, in the year eighteen hundred
and ninety-seven, by REV. W. A.
RODWELL, at the Department
of Agriculture, Ottawa.



PRICE, 10 CENTS.

1897.



HOW TO READ THE BIBLE THROUGH IN A YEAR!

BY DEVOTING FIFTEEN MINUTES A DAY
TO ITS STUDY.

THE PEOPLE'S DAILY BIBLE GUIDE.

By REV. H. ALLEN, England.

New Edition—Revised and Enlarged

By REV. W. A. RODWELL, Toronto.

1897.

PRICE, 10c. EACH—TO BE HAD OF ALL BOOKSELLERS.

*Special Terms to Epworth League & Christian Endeavor
Societies, Ministers and Evangelists.*

HILL PRINTING CO., 48 Richmond St. West, Toronto.

F5012.1897.R628

PREFACE.

To Preachers, Class Leaders, Sabbath-school Teachers, and Scholars, of all denominations, this little book is dedicated, with an affectionate request that it be kept in the Bible as a "Guide to the daily reading of the Scriptures."

I cannot vouch for the accuracy of the dates, &c., but I have done the best I could to make them so.

If this little "Guide" should in any way be the means of the salvation of souls and the glory of God, it will gladden the heart of

Christmas Day.

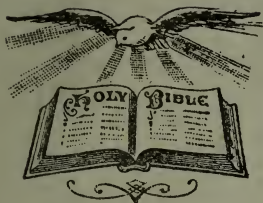
THE COMPILER,
(Rev. H. Allen.)

I have used the "Guide" for upwards of twenty years, and the very great benefit I have derived from its use has prompted me to seek to place it in the hands of others—in its present form—earnestly praying that God may use it for His glory—to whom be praises for ever, Amen,

W. A. RODWELL.

Toronto, 1897.

THE HOLY BIBLE.



Within this ample volume lies
The mystery of mysteries ;
Happiest they of human race,
To whom their God has given grace,
To read, to fear, to hope, to pray.
To lift the latch, to force the way ;
And better had they ne'er been born,
That read to doubt, or read to scorn

—SIR W. SCOTT.

“A dusty Bible is the proof of a feeble, slothful Christian.”

“In reading God’s Word, He speaks to us ; and by prayer we speak to God.”

“Away with trashy literature ! Read the Bible. Read it daily ! and if you have time to read no book but one, let it be the Book of God.”

—DR. W. COOK

JANUARY.

| Jan | 1 | .. | Genesis | 1 | .. | 1 Chron. | 1 | .. | Matt. | 1 |
|-----|----|----|---------|----|----|----------|----|----|-------|----|
| | 2 | .. | | 2 | .. | | 2 | .. | | 2 |
| | 3 | .. | | 3 | .. | | 3 | .. | | 3 |
| | 4 | .. | | 4 | .. | | 4 | .. | | 4 |
| | 5 | .. | | 5 | .. | | 5 | .. | | 5 |
| | 6 | .. | | 6 | .. | | 6 | .. | | 6 |
| | 7 | .. | | 7 | .. | | 7 | .. | | 7 |
| | 8 | .. | | 8 | .. | | 8 | .. | | 8 |
| | 9 | .. | | 9 | .. | | 9 | .. | | 9 |
| | 10 | .. | | 10 | .. | | 10 | .. | | 10 |
| | 11 | .. | | 11 | .. | | 11 | .. | | 11 |
| | 12 | .. | | 12 | .. | | 12 | .. | | 12 |
| | 13 | .. | | 13 | .. | | 13 | .. | | 13 |
| | 14 | .. | | 14 | .. | | 14 | .. | | 14 |
| | 15 | .. | | 15 | .. | | 15 | .. | | 15 |
| | 16 | .. | | 16 | .. | | 16 | .. | | 16 |
| | 17 | .. | | 17 | .. | | 17 | .. | | 17 |
| | 18 | .. | | 18 | .. | | 18 | .. | | 18 |
| | 19 | .. | | 19 | .. | 19, 20 | .. | | | 19 |
| | 20 | .. | | 20 | .. | 21 | .. | | | 20 |
| | 21 | .. | | 21 | | 22 | .. | | | 21 |
| | 22 | .. | | 22 | .. | 23 | .. | | | 22 |
| | 23 | .. | | 23 | .. | 24 | .. | | | 23 |
| | 24 | .. | | 24 | .. | 25 | .. | | | 24 |
| | 25 | .. | | 25 | .. | 26 | .. | | | 25 |
| | 26 | .. | | 26 | .. | 27 | .. | | | 26 |
| | 27 | .. | | 27 | .. | 28 | .. | | | 27 |
| | 28 | .. | | 28 | .. | 29 | .. | | | 28 |
| | 29 | .. | | 29 | .. | 2 Chron | 1 | .. | Mark | 1 |
| | 30 | .. | | 30 | .. | | 2 | .. | | 2 |
| | 31 | .. | | 31 | .. | | 3 | .. | | 3 |

FEBRUARY.

| | | | | | | | | | |
|--------|----|---------|----|----|----------|----|----|------|----|
| Feb. 1 | .. | Genesis | 32 | .. | 2 Chron. | 4 | .. | Mark | 4 |
| 2 | .. | | 33 | .. | | 5 | .. | | 5 |
| 3 | .. | | 34 | .. | | 6 | .. | | 6 |
| 4 | .. | | 35 | .. | | 7 | .. | | 7 |
| 5 | .. | | 36 | .. | | 8 | .. | | 8 |
| 6 | .. | | 37 | .. | | 9 | .. | | 9 |
| 7 | .. | | 38 | .. | | 10 | .. | | 10 |
| 8 | .. | | 39 | .. | | 11 | .. | | 11 |
| 9 | .. | | 40 | .. | | 12 | .. | | 12 |
| 10 | .. | | 41 | .. | | 13 | .. | | 13 |
| 11 | .. | | 42 | .. | | 14 | .. | | 14 |
| 12 | .. | | 43 | .. | | 15 | .. | | 15 |
| 13 | .. | | 44 | .. | | 16 | .. | | 16 |
| 14 | .. | | 45 | .. | | 17 | .. | Luke | 1 |
| 15 | .. | | 46 | .. | | 18 | .. | | 2 |
| 16 | .. | | 47 | .. | | 19 | .. | | 3 |
| 17 | .. | | 48 | .. | | 20 | .. | | 4 |
| 18 | .. | | 49 | .. | | 21 | .. | | 5 |
| 19 | .. | | 50 | .. | | 22 | .. | | 6 |
| 20 | .. | Exod. | 1 | .. | | 23 | .. | | 7 |
| 21 | .. | | 2 | .. | | 24 | .. | | 8 |
| 22 | .. | | 3 | .. | | 25 | .. | | 9 |
| 23 | .. | | 4 | .. | | 26 | .. | | 10 |
| 24 | .. | | 5 | .. | | 27 | .. | | 11 |
| 25 | .. | | 6 | .. | | 28 | .. | | 12 |
| 26 | .. | | 7 | .. | | 29 | .. | | 13 |
| 27 | .. | | 8 | .. | | 30 | .. | | 14 |
| 28 | .. | | 9 | .. | | 31 | .. | | 15 |
| 29 | .. | | 10 | .. | | 26 | .. | | 16 |

MARCH.

| | | | | | | |
|--------|-----|-----------|----|-------------|----|---------|
| Mar. 1 | .. | Exodus 11 | .. | 2 Chron. 32 | .. | Luke 17 |
| 2 | .. | 12 | .. | 33 | .. | 18 |
| 3 | .. | 13 | .. | 34 | .. | 19 |
| 4 | .. | 14 | .. | 35 | .. | 20 |
| 5 | .. | 15 | .. | 36 | .. | 21 |
| 6 | .. | 16 | .. | Ezra 1 | .. | 22 |
| 7 | .. | 17 | .. | 2 | .. | 23 |
| 8 | .. | 18 | .. | 3 | .. | 24 |
| 9 | .. | 19 | .. | 4 | .. | John 1 |
| 10 | ... | 20 | .. | 5 | .. | 2 |
| 11 | .. | 21 | .. | 6 | .. | 3 |
| 12 | .. | 22 | .. | 7 | .. | 4 |
| 13 | .. | 23 | .. | 8 | .. | 5 |
| 14 | .. | 24 | .. | 9 | .. | 6 |
| 15 | .. | 25 | .. | 10 | .. | 7 |
| 16 | .. | 26 | .. | Neh. 1 | .. | 8 |
| 17 | .. | 27 | .. | 2 | .. | 9 |
| 18 | .. | 28 | .. | 3 | .. | 10 |
| 19 | .. | 29 | .. | 4 | .. | 11 |
| 20 | .. | 30 | .. | 5 | .. | 12 |
| 21 | .. | 31 | .. | 6 | .. | 13 |
| 22 | .. | 32 | .. | 7 | .. | 14 |
| 23 | .. | 33 | .. | 8 | .. | 15 |
| 24 | .. | 34 | .. | 9 | .. | 16 |
| 25 | .. | 35 | .. | 10 | .. | 17 |
| 26 | .. | 36 | .. | 11 | .. | 18 |
| 27 | .. | 37 | .. | 12 | .. | 19 |
| 28 | .. | 38 | .. | 13 | .. | 20 |
| 29 | .. | 39 | .. | Esther 1 | .. | 20 |
| 30 | .. | 40 | .. | 2 | .. | 21 |
| 31 | .. | 40 | .. | 3 | .. | 21 |

APRIL.

| April | 1 | .. | Leviticus | 1. | 2 | .. | Esther | 4 | .. | Acts | 1, 2, 3 |
|-------|----|----|-----------|----|----|-----|--------|----|--------|-------|---------|
| | 2 | .. | | 3 | .. | | 5 | .. | | 4 | |
| | 3 | .. | | 4 | .. | | 6 | .. | | 5 | |
| | 4 | .. | | 5 | .. | | 7 | .. | | 6 | |
| | 5 | .. | | 6 | .. | | 8 | .. | | 7 | |
| | 6 | .. | | 7 | .. | | 9 | .. | | 8 | |
| | 7 | .. | | 8 | .. | | 10 | .. | | 9 | |
| | 8 | .. | | 9 | .. | Job | 1 | .. | | 10 | |
| | 9 | .. | | 10 | .. | | 2 | .. | | 11 | |
| | 10 | .. | | 11 | .. | | 3 | .. | | 12 | |
| | 11 | .. | | 12 | .. | | 4 | .. | | 13 | |
| | 12 | .. | | 13 | .. | | 5 | .. | | 14 | |
| | 13 | .. | | 14 | .. | | 6 | .. | | 15 | |
| | 14 | .. | | 15 | .. | | 7 | .. | | 16 | |
| | 15 | .. | | 16 | .. | | 8 | .. | | 17 | |
| | 16 | .. | | 17 | .. | | 9 | .. | | 18 | |
| | 17 | .. | | 18 | .. | | 10 | .. | | 19 | |
| | 18 | .. | | 19 | .. | | 11 | .. | | 20 | |
| | 19 | .. | | 20 | .. | | 12 | .. | | 21 | |
| | 20 | .. | | 21 | .. | | 13 | .. | | 22 | |
| | 21 | .. | | 22 | .. | | 14 | .. | | 23 | |
| | 22 | .. | | 23 | .. | | 15 | .. | | 24 | |
| | 23 | .. | | 24 | .. | | 16 | .. | | 25 | |
| | 24 | .. | | 25 | .. | | 17 | .. | | 26 | |
| | 25 | .. | | 26 | .. | | 18 | .. | | 27 | |
| | 26 | .. | | 27 | .. | | 19 | .. | | 28 | |
| | 27 | .. | Numbers | 1 | .. | | 20 | .. | Psalms | 1, 2 | |
| | 28 | .. | | 2 | .. | | 21 | .. | | 3, 4 | |
| | 29 | .. | | 3 | .. | | 22 | .. | | 5—8 | |
| | 30 | .. | | 4 | .. | | 23 | .. | | 9, 10 | |

MAY.

| May | 1 .. | Numbers | 5 .. | Job | 24 .. | Psalms | 11—13 |
|-----|-------|-----------|-----------|-------|-------|--------|--------|
| | 2 .. | | 6 .. | | 25 .. | | 14—16 |
| | 3 .. | | 7 .. | | 26 .. | | 17 |
| | 4 .. | | 8 .. | | 27 .. | | 18 |
| | 5 .. | | 9 .. | | 28 .. | | 19—21 |
| | 6 .. | | 10 .. | | 29 .. | | 22 |
| | 7 .. | | 11 .. | | 30 .. | | 23—25 |
| | 8 .. | | 12 .. | | 31 .. | | 26—28 |
| | 9 .. | | 13 .. | | 32 .. | | 29, 30 |
| | 10 .. | | 14 .. | | 33 .. | | 31 |
| | 11 .. | | 15 .. | | 34 .. | | 32 |
| | 12 .. | | 16 .. | | 35 .. | | 33 |
| | 13 .. | | 17 .. | | 36 .. | | 34 |
| | 14 .. | | 18 .. | | 37 .. | | 35 |
| | 15 .. | | 19 .. | | 38 .. | | 36 |
| | 16 .. | | 20 .. | | 39 .. | | 37 |
| | 17 .. | | 21 .. | | 40 .. | | 38 |
| | 18 .. | | 22 .. | | 41 .. | | 39, 40 |
| | 19 .. | | 23 .. | | 42 .. | | 41—43 |
| | 20 .. | | 24 .. | Prov. | 1 .. | | 44 |
| | 21 .. | | 25 .. | | 2 .. | | 45 |
| | 22 .. | | 26 .. | | 3 .. | | 46—48 |
| | 23 .. | | 27 .. | | 4 .. | | 49 |
| | 24 .. | | 28 .. | | 5 .. | | 50 |
| | 25 .. | | 29 .. | | 6 .. | | 51, 52 |
| | 26 .. | | 30 .. | | 7 .. | | 53—55 |
| | 27 .. | | 31 .. | | 8 .. | | 56, 57 |
| | 28 .. | | 32 .. | | 9 .. | | 58, 59 |
| | 29 .. | | 33 .. | | 10 .. | | 60, 61 |
| | 30 .. | | 34 .. | | 11 .. | | 62, 63 |
| | 31 .. | 35, 36 .. | 12, 13 .. | | | | 64, 65 |

JUNE.

| June | 1 | .. | Deut. | 1 | .. | Proverbs | 14 | .. | Psalms | 66, 67 |
|------|----|----|-------|----|----|----------|----|----|--------|----------|
| | 2 | .. | | 2 | .. | | 15 | .. | | 68 |
| | 3 | .. | | 3 | .. | | 16 | .. | | 69 |
| | 4 | .. | | 4 | .. | 17, | 18 | .. | | 70, 71 |
| | 5 | .. | | 5 | .. | | 19 | .. | | 72 |
| | 6 | .. | | 6 | .. | | 20 | .. | | 73 |
| | 7 | .. | | 7 | .. | | 21 | .. | | 74 |
| | 8 | .. | | 8 | .. | | 22 | .. | | 75, 76 |
| | 9 | .. | | 9 | .. | | 23 | .. | | 77 |
| | 10 | .. | | 10 | .. | | 24 | .. | | 78 |
| | 11 | .. | | 11 | .. | | 25 | .. | | 79, 80 |
| | 12 | .. | | 12 | .. | | 26 | .. | | 81, 82 |
| | 13 | .. | | 13 | .. | | 27 | .. | | 83, 84 |
| | 14 | .. | | 14 | .. | | 28 | .. | | 85, 86 |
| | 15 | .. | | 15 | .. | | 29 | .. | | 87, 88 |
| | 16 | .. | | 16 | .. | | 30 | .. | | 89 |
| | 17 | .. | | 17 | .. | | 31 | .. | | 90, 91 |
| | 18 | .. | | 18 | .. | Eccles. | 1 | .. | | 92, 93 |
| | 19 | .. | | 19 | .. | | 2 | .. | | 94, 95 |
| | 20 | .. | | 20 | .. | | 3 | .. | | 96, 97 |
| | 21 | .. | | 21 | .. | | 4 | .. | | 98, 99 |
| | 22 | .. | | 22 | .. | | 5 | .. | | 100, 101 |
| | 23 | .. | | 23 | .. | | 6 | .. | | 102 |
| | 24 | .. | | 24 | .. | | 7 | .. | | 103 |
| | 25 | .. | | 25 | .. | | 8 | .. | | 104 |
| | 26 | .. | | 26 | .. | | 9 | .. | | 105 |
| | 27 | .. | | 27 | .. | | 10 | .. | | 106 |
| | 28 | .. | | 28 | .. | | 11 | .. | | 107 |
| | 29 | .. | | 29 | .. | | 12 | .. | | 108, 109 |
| | 30 | .. | | 30 | .. | | 12 | .. | | 110—112 |

JULY.

| | | | |
|-----------|-------------|-----------------|-----------------|
| July 1 .. | Deut. 30 .. | S. Songs 1-4 .. | Psalms 113, 114 |
| 2 .. | 31 .. | 5 8 .. | 115, 116 |
| 3 .. | 32 .. | Isaiah 1 .. | 117, 118 |
| 4 .. | 33 .. | 2 .. | 119, 40 ver. |
| 5 .. | 34 .. | 3 .. | 41-80 " |
| 6 ... | Josh. 1 .. | 4 .. | 81-128 " |
| 7 .. | 2 .. | 5 .. | 129-176 " |
| 8 .. | 3 .. | 6 .. | 120—124 |
| 9 .. | 4 .. | 7 .. | 125—127 |
| 10 .. | 5 .. | 8 .. | 128—130 |
| 11 .. | 6 .. | 9 .. | 131—134 |
| 12 .. | 7 .. | 10 .. | 135, 136 |
| 13 .. | 8 .. | 11 .. | 137—139 |
| 14 .. | 9 .. | 12 .. | 140, 141 |
| 15 .. | 10 .. | 13 .. | 142—144 |
| 16 .. | 11 .. | 14 .. | 145—147 |
| 17 .. | 12 .. | 15 .. | 148—150 |
| 18 .. | 13 .. | 16 .. | Romans 1 |
| 19 .. | 14 .. | 17 .. | 2 |
| 20 .. | 15 .. | 18 .. | 3 |
| 21 .. | 16 .. | 19 .. | 4 |
| 22 .. | 17 .. | 20 .. | 5 |
| 23 .. | 18 .. | 21 .. | 6 |
| 24 .. | 19 .. | 22 .. | 7 |
| 25 .. | 20 .. | 23 .. | 8 |
| 26 .. | 21 .. | 24 .. | 9 |
| 27 .. | 22 .. | 25 .. | 10 |
| 28 .. | 23 .. | 26 .. | 11 |
| 29 .. | 24 .. | 27 .. | 12 |
| 30 .. | 23 .. | 28 .. | 13 |
| 31 .. | 24 .. | 29 .. | 14 |

AUGUST.

| | | | | | | | | | | |
|------|----|----|--------|-----|----|--------|----|----|--------|----|
| Aug. | 1 | .. | Judges | 1-3 | .. | Isaiah | 30 | .. | Romans | 15 |
| | 2 | .. | | 4 | .. | | 31 | .. | | 16 |
| | 3 | .. | | 5 | .. | | 32 | .. | 1 Cor. | 1 |
| | 4 | .. | | 6 | .. | | 33 | .. | | 2 |
| | 5 | .. | | 7 | .. | | 34 | .. | | 3 |
| | 6 | .. | | 8 | .. | | 35 | .. | | 4 |
| | 7 | .. | | 9 | .. | | 36 | .. | | 5 |
| | 8 | .. | | 10 | .. | | 37 | .. | | 6 |
| | 9 | .. | | 11 | .. | | 38 | .. | | 7 |
| | 10 | .. | | 12 | .. | | 39 | .. | | 8 |
| | 11 | .. | | 13 | .. | | 40 | .. | | 9 |
| | 12 | .. | | 14 | .. | | 41 | .. | | 10 |
| | 13 | .. | | 15 | .. | | 42 | .. | | 11 |
| | 14 | .. | | 16 | .. | | 43 | .. | | 12 |
| | 15 | .. | | 17 | .. | | 44 | .. | | 13 |
| | 16 | .. | | 18 | .. | | 45 | .. | | 14 |
| | 17 | .. | | 19 | .. | | 46 | .. | | 15 |
| | 18 | .. | | 20 | .. | | 47 | .. | | 16 |
| | 19 | .. | | 21 | .. | | 48 | .. | 2 Cor. | 1 |
| | 20 | .. | Ruth | 1 | .. | | 49 | .. | | 2 |
| | 21 | .. | | 2 | .. | | 50 | .. | | 3 |
| | 22 | .. | | 3 | .. | | 51 | .. | | 4 |
| | 23 | .. | | 4 | .. | | 52 | .. | | 5 |
| | 24 | .. | 1 Sam. | 1 | .. | | 53 | .. | | 6 |
| | 25 | .. | | 2 | .. | | 54 | .. | | 7 |
| | 26 | .. | | 3 | .. | | 55 | .. | | 8 |
| | 27 | .. | | 4 | .. | | 56 | .. | | 9 |
| | 28 | .. | | 5 | .. | | 57 | .. | | 10 |
| | 29 | .. | | 6 | .. | | 58 | .. | | 11 |
| | 30 | .. | | 7 | .. | | 59 | .. | | 12 |
| | 31 | .. | | 8 | .. | | 60 | .. | | 13 |

SEPTEMBER.

| Sept. | 1 | .. | 1 Samuel | 9 | .. | Isaiah | 61 | .. | Galatians | 1 |
|-------|----|----|----------|----|----|--------|----|----|-----------|---|
| | 2 | .. | | 10 | .. | | 62 | .. | | 2 |
| | 3 | .. | | 11 | .. | | 63 | .. | | 3 |
| | 4 | .. | | 12 | .. | | 64 | .. | | 4 |
| | 5 | .. | | 13 | .. | | 65 | .. | | 5 |
| | 6 | .. | | 14 | .. | | 66 | .. | | 6 |
| | 7 | .. | | 15 | .. | Jer. | 1 | .. | Eph. | 1 |
| | 8 | .. | | 16 | .. | | 2 | .. | | 2 |
| | 9 | .. | | 17 | .. | | 3 | .. | | 3 |
| | 10 | .. | | 18 | .. | | 4 | .. | | 4 |
| | 11 | .. | | 19 | .. | | 5 | .. | | 5 |
| | 12 | .. | | 20 | .. | | 6 | .. | | 6 |
| | 13 | .. | | 21 | .. | | 7 | .. | Phill. | 1 |
| | 14 | .. | | 22 | .. | | 8 | .. | | 2 |
| | 15 | .. | | 23 | .. | | 9 | .. | | 3 |
| | 16 | .. | | 24 | .. | | 10 | .. | | 4 |
| | 17 | .. | | 25 | .. | | 11 | .. | Coll. | 1 |
| | 18 | .. | | 26 | .. | | 12 | .. | | 2 |
| | 19 | .. | | 27 | .. | | 13 | .. | | 3 |
| | 20 | .. | | 28 | .. | | 14 | .. | | 4 |
| | 21 | .. | | 29 | .. | | 15 | .. | 1 Thess. | 1 |
| | 22 | .. | | 30 | .. | | 16 | .. | | 2 |
| | 23 | .. | | 31 | .. | | 17 | .. | | 3 |
| | 24 | .. | 2 Sam. | 1 | .. | | 18 | .. | | 4 |
| | 25 | .. | | 2 | .. | | 19 | .. | | 5 |
| | 26 | .. | | 3 | .. | | 20 | .. | 2 Thess. | 1 |
| | 27 | .. | | 4 | .. | | 21 | .. | | 2 |
| | 28 | .. | | 5 | .. | | 22 | .. | | 3 |
| | 29 | .. | | 6 | .. | | 23 | .. | 1 Tim. | 1 |
| | 30 | .. | | 7 | .. | | 24 | .. | | 2 |

OCTOBER.

| | | | | | | | | | | |
|------|----|----|---------|----|----|----------|----|----|----------|----|
| Oct. | 1 | .. | 2 Sam. | 8 | .. | Jeremiah | 25 | .. | 1 Tim. | 3 |
| | 2 | .. | | 9 | .. | | 26 | .. | | 4 |
| | 3 | .. | | 10 | .. | | 27 | .. | | 5 |
| | 4 | .. | | 11 | .. | | 28 | .. | | 6 |
| | 5 | .. | | 12 | .. | | 29 | .. | 2 Tim. | 1 |
| | 6 | .. | | 13 | .. | | 30 | .. | | 2 |
| | 7 | .. | | 14 | .. | | 31 | .. | | 3 |
| | 8 | .. | | 15 | .. | | 32 | .. | | 4 |
| | 9 | .. | | 16 | .. | | 33 | .. | Titus | 1 |
| | 10 | .. | | 17 | .. | | 34 | .. | | 2 |
| | 11 | .. | | 18 | .. | | 35 | .. | | 3 |
| | 12 | .. | | 19 | .. | | 36 | .. | Philemon | |
| | 13 | .. | | 20 | .. | | 37 | .. | Heb. | 1 |
| | 14 | .. | | 21 | .. | | 38 | .. | | 2 |
| | 15 | .. | | 22 | .. | | 39 | .. | | 3 |
| | 16 | .. | | 23 | .. | | 40 | .. | | 4 |
| | 17 | .. | | 24 | .. | | 41 | .. | | 5 |
| | 18 | .. | 1 Kings | 1 | .. | | 42 | .. | | 6 |
| | 19 | .. | | 2 | .. | | 43 | .. | | 7 |
| | 20 | .. | | 3 | .. | | 44 | .. | | 8 |
| | 21 | .. | | 4 | .. | | 45 | .. | | 9 |
| | 22 | .. | | 5 | .. | | 46 | .. | | 10 |
| | 23 | .. | | 6 | .. | | 47 | .. | | 11 |
| | 24 | .. | | 7 | .. | | 48 | .. | | 12 |
| | 25 | .. | | 8 | .. | | 49 | .. | | 13 |
| | 26 | .. | | 9 | .. | | 50 | .. | James | 1 |
| | 27 | .. | | 10 | .. | | 51 | .. | | 2 |
| | 28 | .. | | 11 | .. | | 52 | .. | | 3 |
| | 29 | .. | | 12 | .. | Lam. | 1 | .. | | 4 |
| | 30 | .. | | 13 | .. | | 2 | .. | | 5 |
| | 31 | .. | | 14 | .. | | 3 | .. | 1 Peter | 1 |

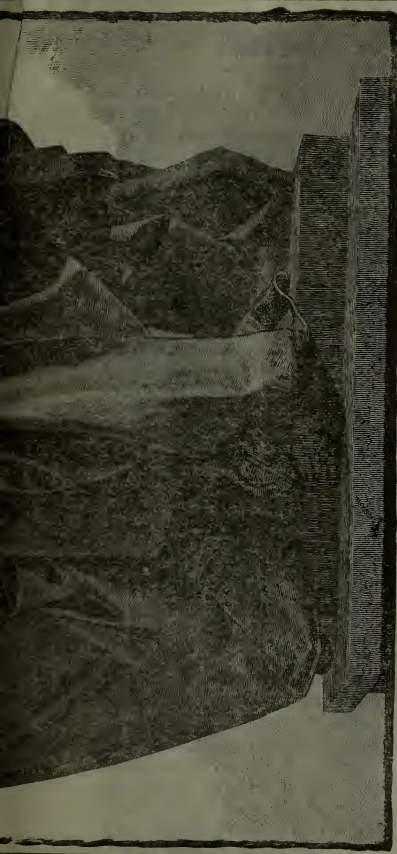
NOVEMBER.

| | | | |
|-----------|---------------|------------|------------|
| Nov. 1 .. | 1 Kings 15 .. | Lam. 4 .. | 1 Peter 2 |
| 2 .. | 16 .. | 5 .. | 3 |
| 3 .. | 17 .. | Ezek. 1 .. | 4 |
| 4 .. | 18 .. | 2 .. | 5 |
| 5 .. | 19 .. | 3 .. | 2 Peter 1 |
| 6 .. | 20 .. | 4 .. | 2 |
| 7 .. | 21 .. | 5 .. | 3 |
| 8 .. | 22 .. | 6 .. | 1 John 1 |
| 9 .. | 2 Kings 1 .. | 7 .. | 2 |
| 10 .. | 2 .. | 8 .. | 3 |
| 11 .. | 3 .. | 9 .. | 4 |
| 12 .. | 4 .. | 10 .. | 5 |
| 13 .. | 5 .. | 11 .. | 2 John |
| 14 .. | 6 .. | 12 .. | 3 John |
| 15 .. | 7 .. | 13 .. | Jude |
| 16 .. | 8 .. | 14 .. | Micah 1, 2 |
| 17 .. | 9 .. | 15 .. | 3, 4 |
| 18 .. | 10 .. | 16 .. | 5, 6 |
| 19 .. | 11 .. | 17 .. | 7 |
| 20 .. | 12 .. | 18 .. | Nah 1 |
| 21 .. | 13 .. | 19 .. | 2 3 |
| 22 .. | 14 .. | 20 .. | Hab. 1 |
| 23 .. | 15 .. | 21 .. | 2 |
| 24 .. | 16 .. | 22 .. | 3 |
| 25 .. | 17 .. | 23 .. | Zeph. 1 |
| 26 .. | 18 .. | 24 .. | 2, 3 |
| 27 .. | 19 .. | 25 .. | Hag. 1, 2 |
| 28 .. | 20 .. | 26 .. | Zech. 1 |
| 29 .. | 21 .. | 27 .. | 2, 3 |
| 30 .. | 22 .. | 28 .. | 4, 5 |

DECEMBER.

| | | | |
|-----------|---------------|---------------|------------|
| Dec. 1 .. | 2 Kings 23 .. | Ezekiel 29 .. | Zech. 6, 7 |
| 2 .. | 24 .. | 30 .. | 8 |
| 3 .. | 25 .. | 31 .. | 9 |
| 4 .. | Hosea 1 .. | 32 .. | 10, 11 |
| 5 ... | 2 .. | 33 .. | 12, 13 |
| 6 .. | 3, 4 .. | 34 .. | 14 |
| 7 .. | 5 .. | 35 .. | Mal. 1 |
| 8 .. | 6 .. | 36 .. | 2 |
| 9 .. | 7 .. | 37 .. | 3, 4 |
| 10 .. | 8 .. | 38 .. | Rev. 1 |
| 11 .. | 9 .. | 39 .. | 2 |
| 12 .. | 10 .. | 40 .. | 3 |
| 13 .. | 11 .. | 41 .. | 4 |
| 14 .. | 12 .. | 42 .. | 5 |
| 15 .. | 13 .. | 43 .. | 6 |
| 16 .. | 14 .. | 44 .. | 7 |
| 17 .. | Joel 1 .. | 45 .. | 8 |
| 18 .. | 2 .. | 46 .. | 9 |
| 19 .. | 3 .. | 47 .. | 10 |
| 20 .. | Amos 1 .. | 48 .. | 11 |
| 21 .. | 2 .. | Dan. 1 .. | 12 |
| 22 .. | 3 .. | 2 .. | 13 |
| 23 .. | 4 .. | 3 .. | 14 |
| 24 .. | 5 .. | 4 .. | 15 |
| 25 .. | 6 .. | 5 .. | 16 |
| 26 .. | 7 .. | 6 .. | 17 |
| 27 .. | 8 .. | 7, 8 .. | 18 |
| 28 .. | 9 .. | 9 .. | 19 |
| 29 .. | Obadiah .. | 10 .. | 20 |
| 30 .. | Jonah 1 .. | 11 .. | 21 |
| 31 .. | 2, 4 .. | 12 .. | 22 |





Statue of Wycliffe on Luther Monument at Worms.*

“John Wycliffe translated the Gospel into the English language, and made it more plain to the laity and to women than it formerly was even to the clergy.”

For which crime his body was exhumed by Fleming, Bishop of Lincoln, and burnt, in 1428, and the ashes thrown in the river Swift, which flows by Lutterworth.

The first complete translation of the whole Bible was made by John Wycliffe. A.D. 1380-1382.

* Use of cut by kind permission of Dr. Withrow, Editor “Methodist Magazine.”

Genuineness of the Bible.

“A poor Christian woman once said to an infidel, ‘I am no scholar; I cannot argue like you; but I know that honey is honey, because it leaves a sweet taste in my mouth; and I know the Bible to be God’s book, because of the taste it leaves in my heart.’”—REV. J. C. RYLE.

Truth of the Bible.

We believe there are thousands of young men inclined to scepticism from pure misapprehension. They think the highest criticism has demolished the Scriptures: they do not know that the Bible was never so fortified by the results of the profoundest scholarship as it is to-day. They believe that all the best scholars deny the genuineness of the gospels; they do not know that such rationalists as Volkmar, Reuss, and Renan assert their authenticity. They believe that Henkle, Strauss, and Renan, have destroyed the trustworthiness of miracles; they do not know that each of these writers oppose the other, and if any one is right the others are wrong. They believe that Wallhausen lectures to hundreds of students, and demonstrates the fictitious character of the Biblical narrative, and especially the New Testament: they do not know that Wallhausen lectures to a dozen students, while Delitzsch, who stands at the head of German scholarship, lectures to 400, and demonstrates the genuineness and authenticity of the Bible, in which he has the concurrence of nine-tenths of the highest scholarship of Germany. If only on these and other points the young men could be made to see the facts as they are, not as they have been misrepresented to them, we might believe there would be less scepticism learned with mathematics and history, and the way would be made easier for bringing the young men into the church.—Christian at Work.

How to Study The Bible.

BY BISHOP JOHN H. VINCENT.

Read the Bible daily. This will require a little resolution. Neither circumstances nor states of feeling should be allowed to interfere with the habit. Resolve to do it, whether so inclined or not. It is said of the Virgin Mary in an old tradition, that she spent a third part of her time in reading the Scriptures. "Sure it is," remarks Trapp, "she was excellently well versed in them, as is proved by her song." Dr. Johnson on his death-bed, said to a young friend: "Attend to the advice of one who has had some fame in the world, and who will shortly appear before his Maker, read the Bible every day of your life."

Queen Elizabeth and the Bible.

It is the day of Elizabeth's entry into London, and the streets are bright with waving banners and gay dresses of the citizens struggling to get closer to the royal procession, and shouting with joy as they behold their young queen. An old man in emblematic dress stands forth before the queen, and it is told Her Grace that this is Time. "Time," quoth she, "and Time it was that brought me hither." Beside him stands a white-robed maiden, who is introduced as "Truth, the daughter of Time." She holds in her hand a book on which is written, "Verbum veritatis," the Word of truth, an English Bible, which she presents to the queen. Raising it with both her hands, Elizabeth presses it to her lips, and then laying it against her heart, amid the enthusiastic shouting of the multitude, she gracefully thanks the city for so precious a gift.

—REV. J. P. SMYTH.

How to Read The Bible.

BY REV. J. C. RYLE.

Begin reading your Bible this very day. The way to do a thing is to do it, and the way to read the Bible is actually to read it. It is not meaning, or wishing, or resolving, or intending, or thinking about it, which will advance you one step. You must positively read. There is no royal road in this matter, any more than in the matter of prayer. If you cannot read yourself, you must persuade somebody else to read to you. But one way or another, through eyes or ears, the words of Scripture must actually pass before your mind.

Read all the Bible, and read it in an orderly way. All Scripture is profitable.

I leave you with one caution : do not think you are getting no good from the Bible, merely because you do not see that good day by day. The greatest effects are often silent, quiet, and hard to detect at the time they are being produced. Remember how silently the dew falls, and how imperceptibly the grass grows. There may be far more doing in your soul than you think by your Bible-reading.

When and What to Read.

If you are impatient, sit down and have a talk with Job.

If you are just a little strong-headed, go to see Moses.

If you are getting weak-kneed, take a look at Elijah.

If there is no song in your heart, listen to David.

If you are a policy man or woman, read Daniel.

If you are getting sordid, spend a while with Isaiah.

If your faith is below par, read Paul.

If you are getting lazy, watch James.

If you are losing sight of the future, climb up to Revelation and get a glimpse of the Promised Land.

—SELECTED.

Preciousness of the Bible.

The primitive Christians were intimately acquainted with the Bible, and generally carried one about them.

Such was their affection for it that many of them have been found buried with the gospel lying on their breasts. Women wore it hanging at their necks. Children were trained up from their infancy to repeat it by heart, and some of them made surprising proficiency.

Some have been ready to part with all rather than with the Scriptures. We read of one who gave a load of hay for only a leaf of one of the epistles.

In 1272 the pay of a labouring man was three half-pence per day. In 1274 the price of a Bible, with a commentary fairly written, was thirty pounds! That precious volume, which may now be obtained, by most labourers, for less than a single day's pay, would then have cost them more than thirteen years' labour to procure.

How great are the privileges of modern Christians! How great must be their guilt if they neglect them!

Will it be asked, "What advantage hath the Christian over the heathen?" We reply, "Much every way; chiefly because unto him is committed the oracles of God."

—REV. T. BINNEY.

Bible Difficulties.

DAVID'S ALLEGED CRUELTY.—2 Sam. 12 : 31.—"And he put them *to* (not *under*) saws, and to harrows, and to axes, etc. As we say to put a person to the plough, to the anvil, to the last, etc.

Also, 1 Chron. 20 : 3—"Instead of 'and he *cut*,' the parallel passage is 'And he *put* them,' which is also the reading here of seven MSS. collated by Dr. Kennicott, —BAGSTER.



Tyndall's Statue on the Thames Embankment, London.*

William Tyndall.

“If God spare my life e're many years, I will cause a boy that driveth the plough shall know more of the Scripture than thou dost”—Tyndall's reply to an emissary of Rome

Wm. Tyndall was burnt at the stake Oct. 6th, 1536, for the only crime of translating the Bible into the English language!

His dying words were, “Lord, open the king of England's eyes.”

“Thus ended the noble life of one of England's bravest sons.”

The first New Testament printed in England was that of William Tyndall, A D. 1525-1526.

Chapters of Pure Gold.

It's a grand thing to really love to read and search the dear old Bible. I want to help you to this experience. It is such a big book, we can only take it in bits, and that's the way to read anyway. Now, if you are hungry at heart, just read the Bread Chapter John 6, or if your feet are slipping, read the Rock Chapter Deut. 32, or do you find yourself getting a little cross, read the Charity Chapter, 1 Cor. 13. Have you had lots of defeats with Satan, read the Victory Chapter, Romans 8. Have you no faith, then read Hebrews xi.

To tell a young convert or some inquiring soul “to read the Bible” is like sending a patient into a drug store with the injunction to help himself. That won't do. Well put prescriptions are needed. You will find some here, and others may be had by just a little study. They may do you good.

—C. H. YATMAN.

*Use of cut by kind permission of Rev. Dr. Withrow, Editor “Methodist Magazine.”

A Chronological Arrangement of the Books of the Old and New Testaments.

| When Written. | B. C. | By Whom. | Cpts. | Contains a History of |
|-----------------------|---------|----------|-------|-----------------------|
| Genesis | 1491 | Moses | 50 | 2369 years |
| Job | 1491 | " | 42 | |
| Exodus | 1491 | " | 40 | 145 " |
| Leviticus | 1491 | " | 27 | |
| Deuteronomy | 1451 | " | 34 | |
| Numbers | 1451 | " | 36 | 39 " |
| Joshua | 1427 | Joshua | 24 | 30 " |
| Judges | 1406 | Samuel | 21 | 317 " |
| Ruth | 1312 | " | 4 | |
| 1 Samuel | 1055 | " | 31 | 80 " |
| 2 Samuel | 1018 | Gad | 24 | 40 " |
| 1 Chronicles | 1015 | Ezra | 29 | |
| Psalms | uncrtn. | Dvd &c. | 150 | |
| Song of Solomon | 1014 | Solomon | 8 | |
| 1 Kings I-II | 1004 | Jeremh. | 22 | 119 " |
| 2 Chron. I-9 | 1000 | Ezra | 36 | 416 " |
| Proverbs | 1000 | Solomon | 31 | |
| Ecclesiastes | 977 | " | 12 | |
| 1 Kings 12-&c | 897 | Jeremh. | 22 | 500 " |
| Jonah | 862 | Jonah | 4 | Pro. 41 " |
| Joel | 800 | Joel | 3 | " 40 " |
| Amos | 787 | Amos | 9 | " 46 " |
| Micah | 750 | Micah | 7 | " 61 " |
| Hosea | 740 | Hosea | 14 | " 60 " |
| Nahum | 713 | Nahm. | 3 | " 41 " |
| Isaiah | 698 | Isaiah | 66 | " 61 " |
| Zephaniah | 630 | Zeph. | 3 | " 34 " |
| Habakkuk | 626 | Habak. | 3 | " 10 " |
| 2 Chron 10-&c | 623 | Ezra | 36 | 416 " |
| 2 Kings | 590 | Jermh. | 25 | 410 " |
| Jeremiah | 588 | " | 52 | " 42 " |
| Lamentations | 588 | " | 5 | |
| Obadiah | 587 | Obadh | 1 | |

| When Written | B. C. | By Whom. | Cpts. | Contains a History of | |
|--------------------|-------|----------|-------|-----------------------|----------|
| Ezekiel..... | 574 | Ezekiel | 48 | Pro. | 22 years |
| Daniel..... | 534 | Daniel | 12 | " | 30 " |
| Haggai..... | 520 | Haggai | 2 | | |
| Zechariah..... | 520 | Zech. | 14 | | |
| Esther..... | 509 | Ezra | 10 | | |
| Ezra..... | 457 | " | 10 | | 80 " |
| Nehemiah..... | 434 | Nehem. | 13 | | 35 " |
| Malachi..... | 397 | Malachi | 4 | | |
| A. D. | | | | | |
| Matthew..... | 38 | Matth. | 28 | | |
| Galatians..... | 53 | Paul | 6 | | |
| 1 Thess..... | 54 | " | 5 | | |
| 2 Thess..... | 55 | " | 3 | | |
| 1 Corinthians..... | 57 | " | 16 | | |
| Romans..... | 58 | " | 16 | | |
| 2 Corinthians..... | 58 | " | 13 | | |
| 1 Timothy..... | 58 | " | 6 | | |
| James..... | 61 | James | 5 | | |
| Ephesians..... | 63 | Paul | 6 | | |
| Philippians..... | 63 | " | 4 | | |
| Colossians..... | 63 | " | 4 | | |
| Philemon..... | 63 | " | 1 | | |
| Luke..... | 63 | Luke | 24 | | |
| Hebrews..... | 63 | Paul | 13 | | |
| Mark..... | 63 | Mark | 16 | | |
| Acts..... | 64 | Luke | 28 | | |
| 1 Peter..... | 64 | Peter | 5 | | |
| 2 Peter..... | 65 | " | 3 | | |
| Titus..... | 66 | Paul | 3 | | |
| 2 Timothy..... | 66 | " | 4 | | |
| 1 John..... | 69 | John | 5 | | |
| 2 John..... | 69 | " | 1 | | |
| 3 John..... | 69 | " | 1 | | |
| Jude..... | 70 | Jude | 1 | | |
| Revelation..... | 96 | John | 22 | | |
| John..... | 97 | " | 21 | | |

Thirteen Appearances of Jesus After the Resurrection.

1. To Mary Magdalene, Jn. xx. 14; Mar. xvi. 9.
2. To the other women, Matthew xxviii. 9.
3. To Peter, 1 Cor. xv. 5; Luke xxiv. 34.
4. To two disciples, Mark xvi. 12; Luke xxiv. 13-32.
5. The same day, 1 Cor. xv. 5; Mark xvi. 14.
6. To the apostles, &c., John xx. 24-29.
7. In Galilee, &c., John xxi. 1-14.
8. To the disciples in Galilee, Matt. xxviii. 16.
9. To more than 500 at once, 1 Cor. xv. 6.
10. To James, one of the apostles, 1 Cor. xv. 7.
11. To all the apostles together, 1 Cor. xv. 6.
12. To the apostles at his ascension, Luke xxiv. 50, 51; Acts i. 9, 10.
13. To Paul, 1 Cor. xv. 8; Acts ix. 3-5; xxii. 6-10.

Taken From My Bible.

The number of the Hebrew Manuscripts of the Old Testament was 1261; and the number of the Greek New Testament was 1272.

The Alexandrian Greek version, called the Septuagint, or 70, because 70 persons were employed in making it. Translated into English by Charles Thompson, Esq.

The Latin Vulgate was made from the Greek by Jerome, A.D. 384; the Old Testament out of the original Hebrew.

The Vulgate was the first book ever printed, by Faust, 1455.

At Trent, in 1545, the Latin Vulgate was declared to be the Standard Version of the Romish Church.

Wickliff's Bible was translated from the Latin Vulgate into English about 1379 or 1381.

Dr. Clarke has made use of an old English version supposed to have been translated into English in 1361.

W. Tindale's Test was printed in English in 1526; second edition, 1526; third, 1534; fourth. 1535.

The Bishop's Bible was printed in 1568.

There were, at the commencement of James' reign, two English translations in use--the Geneva and the Bishops'.

The first meeting at Hampton Court was Jan. 16, 1603-4. Accordingly, 54 men were nominated, but only 47 names appear. It was finished and published, in folio, 1611. Some copies dated 1612 and 1613.

The Bible printed at Cambridge, in 1639, was revised by Drs. Ward and Good. The corrections were made by Dr. Blaney in 1769: 30,495 new references were inserted in the margin. This is the Standard Edition.

The revised version of the English Bible was begun in England June 22, 1870, and in America, October 4, 1872. The New Testament was completed in England, November 11, 1880, and in America, October 22, 1880.

YEAR —The Jewish year consisted of twelve months. The commencement of the year was changed at the institution of the passover. (Exod. xii. 1; Lev. xxiii. 5.)

| Sacred. | Beginning with the new moon. |
|------------------------|------------------------------|
| 1 Abib or Nisan | March and April |
| 2 Tyar, or Zif | April and May |
| 3 Sivan | May and June |
| 4 Thammuz | June and July |
| 5 Ab | July and August |
| 6 Elul | August and September |
| 7 Tisri | September and October |
| 8 Marchesvan | October and November |
| 9 Chisleu | November and December |
| 10 Thebeth | December and January |
| 11 Shebat | January and February |
| 12 Adar | February and March |

Curious Calculations.

OLD TESTAMENT.—Books, 39; Chapters, 929; Verses, 23,214; Words, 592,439; Letters 2,728,100; Middle Book, Proverbs; Middle Chapter, Job xxix; Mid. Verse, 2 Chr. xx. 17; Shortest V., 1 Chr. i. 25.

NEW TESTAMENT.—Books, 27; Chapters, 260; Verses, 7,959; Words, 181,253; Letters, 838,380; Middle Book, 2 Thessalonians; Middle Chapters, Romans xiii., xiv.; Mid. Verse, Acts xvii. 17; Shortest V., John xi. 35.

Total, 3,566,480 letters; 773,692 words; 31,173 verses; 1,189 Chapters; and 66 Books.

The middle and shortest chapter is the 117th Psalm; the middle verse, 8th of the 118th Psalm.

The 21st verse of the 7th chapter of Ezra has all the letters of the Alphabet in it, with the exception of the letter j.

The 19th chapter of the 2 Book of Kings and 37th chapter of Isaiah are alike or nearly so.

The word and occurs 46,227 times. The word reverend only once, which is in the 9th verse of the 111th Psalm.

The word Lord occurs 1,855 times.

The 8th, 15th, 21st, and 31st verses of the 107th Psalm are alike.

The Inspiration of the Bible.

H. L. HASTINGS.

Again, I conclude that this book has in it the very breath of God, from the effect that it produces upon men. There are men who study philosophy, astronomy, geology, geography, and mathematics; but did you ever hear a man say, "I was an out-cast, a wretched inebriate, a disgrace to my race, and a nuisance in the world, until I began to study mathematics, and learned the multiplication table, and then turned my attention to geology, got me a little hammer, and knocked off the corners

of the rocks and studied the formation of the earth, and since that time I have been happy as the day is long; I feel like singing all the time; my soul is full of triumph and peace; and health and blessing have come to my desolate home once more?" Did you ever hear a man ascribe his redemption and salvation from intemperance and sin and vice to the multiplication table, or the science of mathematics or geology? But I can bring you, not one man, or two, or ten, but men by the thousand who will tell you, "I was wretched; I was lost; I broke my poor old mother's heart; I beggared my family; my wife was heart-stricken and dejected; my children fled from the sound of their father's footsteps; I was ruined, reckless, helpless, homeless, hopeless, until I heard the words of that Book!" And he will tell you the very word which fastened on his soul. It may be it was, "Come unto Me, all ye that labor and are heavy laden, and I will give you rest;" perhaps it was, "Behold the Lamb of God, which taketh away the sin of the world;" it may have been, "God so loved the world that he gave his only begotten Son, that whosoever believeth in him should not perish, but have everlasting life." He can tell you the very word that saved his soul. And since that word entered his heart, he will tell you that hope has dawned upon his vision; that joy has inspired his heart; and that his mouth is filled with grateful song. He will tell you that the blush of health has come back to his poor wife's faded cheek; that the old hats have vanished from the windows of his desolate home; that his rags have been exchanged for good clothes; that his children run to meet him when he comes; that there is bread on his table, fire on his hearth, and comfort in his dwelling. He will tell you all that, and he will tell you that this Book has wrought the change.

The Quail Story.

"Men love objections; and so they say there are difficulties, and absurdities, and errors, and contradictions in the Bible. You have all heard such assertions. After speaking once in the city of Boston, an ex-minister came to me and told me that the Bible was not true, for there was that story which Moses told about the quails. Israel lusted after flesh, and the Lord sent them quails to eat, and they fell by the camp a day's journey

on each side, or over a territory forty miles across, and they were two cubits deep on the ground, and the Israelites ate them for a full month. I have in my possession an infidel paper which was published in Boston, in which there is about a column of arguments and figures on this 'quail story;' giving an estimate of the number of bushels of quails that were piled up over the country, and showing that when they were divided among the host of Israelites, each one would have 2,888,643 bushels of quails, which they were to eat during the month; giving each poor Israelite 69,620 bushels of quail to eat at each meal for thirty days, and therefore the Bible was not true! [Great laughter and applause.] That is the sort of food our skeptical friends love to eat. That is the meat on which these Cæsars grow so wondrous great.

I said to this gentleman, 'The Bible does not say any such thing!' He replied that it certainly did; but I answered that it did not say any such thing. He insisted that it did. 'Well,' said I, 'find it!' And when you ask an infidel to find anything in the Bible, you generally have him. He could not find the place; so I turned over to the eleventh chapter of Numbers, and there read that instead of the birds being packed like cordwood on the ground, three feet deep, the account says that the Lord brought the quails from the sea, and let them fall by the camp, as it were 'two cubits high,' or about three feet high upon, or above, the face of the earth. That is, instead of flying overhead and out of reach, they were brought in about three feet high, where any one could take as many of them as he chose. And this skeptical friend had got the birds packed solid, three feet deep, over a territory forty miles across. As if I should say that a flock of geese flew as high as a church spire, and some one should insist that they were packed solid from the ground up, a hundred feet high! This is a sample of the kind of arguments infidels bring to prove that the Bible is not true!"

—H. L. HASTINGS.

"Instead of gems and silks," says St. Jerome to Loeta, "let your young daughter be enamored with the Holy Scriptures."

Jewish Time, Monies, Measures, and Weights.

TIME.

Our nine o'clock in the morning was their third; our noon their sixth; our sixth their twelfth; and the night divided into four watches.

MONIES.

- A Mite, less than a $\frac{1}{4}$ of a cent.
- The Penny, 13 cents.
- The Shekel, (Silver), about 50 cents
- A Shekel, (Gold), \$8.00.
- A Talent, (Silver), \$538.30.
- A Talent, (Gold), \$13,809.00.

MEASURES AND WEIGHTS.

- A Handbreadth, about three inches and a half.
- A Span, three handbreadths 10 inches.
- A Cubit, two spans 20 inches.
- A Fathom, four cubits 6 feet 8 inches.
- A Measuring-Line, 80 cubits 146 feet.
- A Furlong, (or Stadium), 400 cubits.
- Five Furlongs, a-Sabbath-days' journey.
- Ten Furlongs, an Eastern mile.
- An Omer, six and three-fourth pints English.
- The Hin, one-and-a-half gallon, English.
- The Ephah, seven-and-a-half gallons.
- The Homer, ten ephahs.

About 4,000 years from the creation, JESUS CHRIST came into this world.

(Jesus was the son of Mary.) From the passion of Christ to the death of Mary about 12 years—she was 59 when she died. She lived with John from the sufferings of Christ to her death.

**The following will show the Travels and
Labours of Christ :**

| | Distance. | Places. | Miles. |
|------|------------------------------|---------|--------|
| From | Nazareth to Jerusalem..... | | 64 |
| " | Galilee | " | 74 |
| " | Capernaum | " | 84 |
| " | Cana of Galilee | " | 68 |
| " | Gennesareth | " | 56 |
| " | Heliopolis, Egypt | " | 300 |
| " | Judæa | " | 42 |
| " | Tyre | " | 100 |
| " | Nain | " | 54 |
| " | Mount Tabor | " | 60 |
| " | Chorazin | " | 86 |
| " | Tiberias | " | 61 |
| " | Syro-Phenicia | " | 140 |
| " | Magdala | " | 78 |
| " | Bethabara | " | 19 |
| " | Bethany | " | 2 |
| " | Nazareth to Bethlehem..... | | 72 |
| " | " to Canaan in Galilee | | 8 |
| " | Philippi to Capernaum | | 8 |
| " | Cesarea | " | 21 |
| " | " Mount Tabor..... | | 48 |
| " | Capernaum | " | 20 |
| " | Samaria to Jerusalem..... | | 32 |
| " | Zidon | " | 140 |

Christ travelled while here not less than 915 miles the first year, and 969 miles the second year of his ministry; and during his stay here about 3,100.

How significantly appropriate are the words of Peter, He "went about doing good." Acts 10: 38.

Suggestions for Young Christians.

- 1.—Take for your Life motto—Phil. 1: 21.
1 Cor. 10: 31.
- 2.—Never Neglect Daily Private Prayer.
Dan. 6: 10; Matt. 6: 6.
- 3.—Never Neglect Daily Private Bible Reading.—Ps. 119: 18; John 5: 39.
- 4.—Never let a day pass without doing something for Jesus.—Ecc. 11: 6; Ecc. 9: 10.
- 5.—If ever you are in doubt about a thing being right or wrong, ask yourself, "What would Jesus do?" and always take the way that involves the greatest self-denial. Heaven is reached by way of the cross.—Heb. 12: 1, 2. *Selected.*

Helpful Books For Bible Study.

- "**Cruden's Concordance**," very helpful.
- "**Kitto's Daily Bible Illustrations**."
(Dr. Porter's Edition.)
- "**Dictionary of Scripture Names**."
—Farrar.
- "**Keys to the Word**."—A. T. Pierson.
- "**Infallible Proofs**"—Dr. Pierson.
- "**Inspiration of the Bible**."
—H. L. Hastings.
- "**Theological Compend**."—Binney.